चम्पारण में गाँधी

अवधेश कुमार*

गांधी की अफ्रीकी आन्दोलन की सफलता का व्यापक असर पड़ा। 1916 में लखनऊ कांग्रेस में चम्पारण के दुःख–दर्द को गांधी के समक्ष उपस्थित किया गया। अपनी आत्मा कथा में गांधी ने स्वंय इस संदर्भ में लिखा है– '' राजकुमार शुक्ल स्वंय चम्पारण के एक किसान थे। उन पर दुख से उनके भीतर नील का धब्बा सबके लिए धो डालने की आग जली। मैं लखनऊ की महासभा में गया था। वहाँ इन किसानो ने मेरा पल्ला पकड़ा ''वकील बाबू आपको सब हाल बतायेंगे'' यह कहते जाते और मुझे चम्पारण आने का निमंत्रण देते जाते थे। वकील बाबू से मतलव था मेरे चम्पारण के प्रिय साथी बिहार की सेवा जीवन के प्राण–ब्रजकिशोर बाबू। राजकुमार शुक्ल उन्हे मेरे तम्बू मे लाए। उन्होने काले आलपाकर की अचकन–पतलुन, आदि पहन रखी थी। मेरे मन पर उनकी कोई अच्छी छाप न पड़ी। मैं मान लिया कि वह भोले किसानो को लुटने वाले कोई वकील साहब होगे।

मैंने चम्पारण की कथा उनसे थोड़ी सी सुनी। अपने साधारण रिवाज के अनुसार मैने जतवा दिया–''स्वंय देखे बिना इस विषय पर मैं कोई राय नही दे सकता। आप महासभा में बोलिएगा। मुझे तो फिलहाल छोड़ ही दीजिए। राजकुमार शुक्ल को तो महासभा की सहायता की आवश्यकता थी ही। चम्पारण के बारे में महासभा में ब्रजकिशोर बाबू बोले और सहानुभूति सूचक प्रस्ताव पेश हुआ। राजकुमार शुक्ल को प्रसन्नता हुई, पर इतने से ही उन्हे संतोश नही हुआ। वह तो स्वयं मुझे चम्पारण के किसानो का दुख दिखाना चाहते थे। मैंने कहा–'' अपने दौरे मे मैं चम्पारण को भी सम्मिलित कर लूंगा और एक दो दिन दूंगा।'' उन्होने कहा–एक दिन काफी होगा। अपनी दृष्टि से देखिए तो सही। लखनऊ से मैं कानपुर गया। वहाँ भी राजकुमार शुक्ल उपस्थित थे। यहाँ से चम्पारण बहुत समीप है, एक दिन दे दीजिए ं अभी मुझे माफ कीजिए पर मैं आउँगा, यह वचन देता हूँ। यह कहकर मैं अधिक बंध गया। में आश्रम गया वहाँ भी राजकुमार शुक्ल मेरे पीछे लगे हुए थे अब तो दिन मुकर्रर कीजिए। मैने कहा जाइए मुझे फलां तारिख को कलकता जाना है, वहाँ आइएगा और मुझे ले आइएगा।[1]

अंततः गांधी जी के कलकता से रेलगाड़ी में पटना लाने में राजकुमार शुक्ल सफल हुएं पटना आने के बाद उन्हें शुक्ल जी लेकर डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद के आवास पर ले गए। किन्तु राजेन्द्र बाबू नही थे। फलतः कुछ विश्राम किए और अपने लन्दन के सहपाठी मौलाना मजहरूल हक के यहाँ गए। फिर ट्रेन पर सवार होकर मुजफ्फरपुर आधी रात को आए। गांधी जी के आगमन की प्रतिक्षा में जी0बी0बी0 कॉलेज (अब लंगट सिंह कॉलेज) के इतिहास विभाग के प्राध्यापक प्रो0 जे0 वी0 कृपलानी कतिपय छात्रो के साथ प्लेटफार्म पर प्रतीक्षारत थे। मुजफ्फरपुर स्टेशन से कृपलानी के साथ वर्त्तमान लंगट सिंह कॉलेज के प्राध्यापक मलकानी जी के निवास पर रात्रि विश्राम किए और प्रातः लंगट सिंह कॉलेज के कूप पर स्नान किया जो, (अब गांधी कूप के नाम से जाना जाता है।) मलकानी जी के यहाँ गांधी जी का ठहरना उसकाल की स्थिति के अनुसार ठीक नही था। मलकानी के यहाँ ठहराव के क्रम मे कृपलानी जी ने बिहार एवं चम्पारण की स्थिति से अच्छी तरह अवगत करा दिया।

अब मुजफ्फरपुर के वकीलो का एक दल गांधी जी से मिलने आये जिसमे रामनौमी प्रसाद प्रमुख थे। राजेन्द्र बाबू और ब्रजकिशोर बाबू बाहर थे। उनहे तार देकर बुलाया गया और लंगट सिंह कॉलेज से गोधीजी को गया बाबू वकील के यहाँ ठहराया गया जहाँ सारी सुविधा थी और सारी कार्य योजना बनी। ब्रज किशोर बाबू दरभंगा से तथा राजेन्द्र बाबू पुरी से गया बाबू के मुजफ्फरपुर निवास पर उपस्थित हो गए। अब गाँधी जी भी इतमिनान से बाते की। गांधी जी ने आत्मकथा में स्पष्ट लिखा है कि चम्पारण के किसानो के मुकदमें में ब्रज किशोर बाबु और राजेन्द्र बतौर वकील लड़ते थे। स्थानीय लोगो के अनुसार वकीली सलाह देने के नाम पर दस हजार रूपये लेते थे। यह सुनकर गांधी जी अवाक रह गए क्योकि 1917 के काल में दस हजार रूपये मात्र सलाह लेने के लिए अधिक था। सारी बातों की जानकारी प्राप्त कर गांधी जी ने कहा कि मुकदमें लड़ने से कोई विशेष लाभ नही है और शोषितों का और शोषण होगा। ऐसी स्थिति में स्थायी निदान निकालना अत्यावश्यक है। इस संदर्भ में उन्होंने ब्रज किशोर बाबू से सहयोग की कामना की जिसे स्वीकार करते हुए ब्रज किशोर बाबू से सहयोग की कामना की जिसे स्वीकार करते हुए ब्रज किशोर बाबू ने यथासंभव मदद का आश्वासन दिया। गांधी जी ने बताया कि सारे कागजात हिन्दी अथवा कैथी लिपि मे है जिसे समझने के लिए उन्हे द्विभाषित प्रायः गांधी जी के साथ रहे ताकि कोई दिक्कत कार्य योजना मे नही पड़े। अततः सारी योजनायें बन गयी और कार्यरूप देने की अब आवश्यकता हुई।

गांधीजी ने वकीलो से अनुरोध किया कि उन्हे निःशुल्क सेवा देनी होगी और जेल जाने की भी नौबत आ सकती है। अतः दोनो ही मुद्दों पर सहमति आवश्यक थी जो प्राप्त हो गयी। कार्यारंभ से पूर्व गांधी जी ने सोचा कि नीलहो तथा किसानो से बारी–बारी से मिलकर वस्तुस्थिति को जानना आवश्यक था। इसके साथ ही कमिश्नर से भी सम्पर्क साधना आवश्यक था। पहली समस्या गांधी के समक्ष यह आयी कि नीलहों ने गांधी को बाहरी बताकर इस व्यवसथा से अलग रहने की सलाह दी और कमिश्नर ने उन्हे धमकी दी।

तमाम परिस्थितियों के मध्य गांधी जी ने सोचा कि राज कुमार शुक्ल के घर के निकट के किसानो की तबाही ज्यादा है। अस्तु सर्वप्रथम उसकी फरियाद सुनी जाए और इस क्रम मे यदि गिरफ्तार भी होते है तो डर नही। यहाँ राज कुमार शुक्ल

***ग्राम+पो0–मछही, थाना–सकरा जिला–मुज0**

का परिचय उन्ही के शब्दो मे देना न्यायाचित होगां दो गांवो मे मेरा मकान है। उसमें से एक मुरली भरवा शिकारपुर थाना में है। मुरली भरबा रामनगर राज का एक गांव है जिसे बेलवा फैक्ट्री श्री उमन साहब ने पट्टे पर लिया है। मेरा पुश्तैनी घर पिछले 200 वर्षो से सतवरिया मे है। सतवरिया में करीब 1500 रूपये की तथा कथवरिया मे करीब 60 रूपये की मेरी महाजनी है। पहले तीन–चार वर्षो के लिए मैं महारानी जानकी कुँवर के बगान महाल में मोहर्रिर था। इस जिला के प्रायः सभी फैक्ट्रियों के तौर तरीको से परिचित हूँ। अपनी शाखाओं सहित फैक्ट्रियों की संख्या वहाँ करीब 70 हैं पूरा जिला करीब–करीब इन्ही तीन फैक्ट्रियो के अधीन है।[2]

श्री राजकुमार शुक्ल के उपर्युक्त बयान से स्पष्ट है कि वे नीलहो की सारी करतूतों से व्यक्तिगत रूप से अवगत थे। वहाँ के निवासी एवं बेतियाराज के मोहर्रिर (भिमिक) होने की वजह से भूमि की सारी जानकारी उन्हे थी। ऐसी स्थिति मे व्यथा कथा को गांधी जी के समक्ष किसानों को उपस्थित करना आसान था। अब गांधीजी मोतिहारी गए और गोरखबाबू वकील के यहाँ जगह लेकर कार्यारंभ करना चाहते थे। उन्हे ज्ञात हुआ कि मोतिहारी के सन्निकट ही एक किसान का बड़े पैमाने पर उत्पीडन हुआ था। फिर वहाँ के लिए चले कि रास्ते मे ही एस0पी0 साहब का फरमान आया कि मोतिहारी छोड़ दें। नकारात्मक उत्तर देने पर अदालत मे कल ही उपस्थिति होने का आदेश मिल गया। फिर सूचना के अनुसार वे कचहरी गए। वहाँ की दशा–दिशा को देखकर गांधी जी आश्चर्य मे थे कि जत्था का जत्था लोग उनके आगे–पीछे दौड़ रहा था। शोषितो को लगता था कि कोई उद्धारक आ गया है। गांधी जी ने बड़ी विनम्रता के साथ कोर्अ कचहरी के कार्यो का निष्पादन किया। फिर मूल समस्या की ओर मुखातीव हुए। वहाँ दो प्रकार की दिक्कते थी, प्रथम कि कांग्रेस शब्द से परहेज करना था क्योकि स्थानीय शासन उसके पूर्णतः प्रतिकुल था और दूसरा कि वहाँ के लोग पूर्णतः अशिक्षित थे और उन्हे बड़ी वारीकी से पार लगाना था।

अब गांधी जी की यात्रा राजकुमार शुक्ल के गाँव मूरली भरहवा की हुई उनके साथ इस यात्रा में रामनवमी प्रसाद, ब्रज किशोर प्रसाद और राजकुमार शुक्ल थे। प्रातः छः बजे नरकटियागंज पहुँच कर वहाँ से सात किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित मूरली भरहवा के लिए पांव पैदल चल दिये। शुक्ल जी के दवाजे पर क्षेत्र के तमाम लोग उपस्थित होकर अपनी व्यथा कथा सुनाया। इस पर यात्रा के क्रम में उन्होंने बैलवा कोठी के प्रबंधक से भी बाते की। शुक्ल जी के आवाश पर ही भोजन किया और रात्री विश्राम अमोलवा गाँव के सन्त राऊत के यहाँ करते हुए प्रातः बेतिया वापस हो गए। बेतिया में फिर डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद गांधी जी के साथ हो लिए और वहाँ से वे साठी कोठी गए जहाँ किसानो से लंबी–वार्ता की। साठी कोठी और प्ररसा कोठी के प्रबंधको से बातचीत हुई लौटकर मोतिहारी आ गए और जिलाधीश से मोतिहारी में 3 मई को बातें की। इधर राँची के मुख्य सचिव गांधीजी के तार भेजकर 10 मई को बॉकीपुर में आमंत्रित किया। ऊधर जाँच का कार्य अवाध गति से चलता रहा।

15 अप्रैल 1917 से 13 जून 1917 तक नीलवरों की अत्याचार की जाँच होती रही। गांधीजी और उनके सहयोगीगण चम्पारन के गांव को दौड़ाकर किसानों के बयान दर्ज करते गए। गांधीजी के समीप बरबस लोग अपनी फरियाद लेकर आते रहे और गांवो का दौरा होता रहा अंततः चम्पारन के जिलाधिकारी और गांधीजी के बीच वार्ता दो घंटे हुई। जिलाधीश ने गांधी जी से कहा कि अतिशीघ्र जाँच पूर्णकर अपनी रपट प्रस्तुत करे। अब गांधीजी (4000) चार हजार लोगों के बयान से संबंधित रिर्पोट 13 मई 1917 को बिहार और उड़ीसा के मुख्य सचिवों को भेजा और उसकी प्रतिलिपि अधिनस्त अधिकारियों को दी गईं इस प्रकार गांधीजी ने चम्पारन के नीलहों के विरूद्ध सघन अभियान चलाकर इस महाकष्ट से परित्राण दिलाने का अथक प्रयास किया। चम्पारन मे महात्मा गांधी जी के आगमन से यहाँ के लोगों में नव चेतना का संचार हुआ। इसके पूर्व यहाँ के जन–जीवन में सामाजिक तथा बौद्धिक चेतना का प्रायः अभाव ही था। पाठशाला अथवा स्कूलों के अभाव में शिक्षा नाम मात्र की थी। गाँव व शहरों में बहुत गन्दगी थी। गन्दगी की वजह से हमेशा बीमारी अथवा महामारी का प्रकोप रहता था। चिकित्सा एवं चिकित्सालय दोनो की ही समुचित व्यवस्था न थी। गाँव वाले संगठित होकर कार्य नही करते थे। महात्मा गांधी का विश्वास था कि इसका मूल कारण लोगों का निरक्षर होना था। मानसिक उन्नति के बिना इनका उद्धार असंभव था। नीलवरो के दुःखो से उन्हें छुटकारा मिल भी जाय तो भी वे अन्य दुःखो के बन्धन में जकड़ जाऐंगे।[3]

विद्यालय की स्थापना एवं उद्घाटन के क्रम में गांधीजी ने हिन्दी भाषी की वकालत की। अपने संपूर्ण चम्पारण भ्रमण के क्रम मे उन्होंने अनुभव किया कि वहाँ शिक्षा की बड़ी कमी थी और लोग काफी अविकसित विचार धारा के थे। अतः शिक्षा के विकास के लिए विद्यालय की स्थानो करना उन्होने प्रथम उद्देश्य माना। इस क्रम मे गांधीजी ने मोतीहारी लौटकर ढाका के निकट बरहरबा लखनसेन में विद्यालय खोलना चाहा जहाँ शिव गुलाम लाल नाम के एक व्यक्ति ने अपना मकान इस कार्य के लिए दिया। यही वह मूल बिन्दु है जहाँ से चम्पारन में गांधी ने शिक्षा की मंदिर की स्थापना का श्रीगणेश किया। नीलहों की कार्य गुजारी के शिकार चम्पारवासियों का मूल कारण अशिक्षित होना था। इस पाठशाला में बम्बई के श्री बबन गोखले, इनकी विदुषी धर्मपत्नी श्रीमति अवंतिका गोखले तथा महात्मा गांधी के पुत्र श्री देवदास गांधी, शिक्षण का कार्यभार देखने लगे। गोखले महाशय के प्रबंध एवं निर्देशन मे लगभग 140 बच्चे शिक्षा अर्जित करने लगे तथा श्रीमति गोखले 40 लड़कियों को कपड़ा बुनने का प्रशिक्षण दिया जाता था। श्री एवं श्रीमति दोनों ही गांव की गन्दगी को साफ करते थे तथा लोगों को भी गांव की सड़के, कुंओ, नालियों इत्यादि को स्वच्छ रखने की शिक्षा देते। गांव के लोगों ने जब देखा कि बड़े लोग हमारी गंदगी को खुद साफ कर रहे हैं तो उन्हें भी इस प्रकार के कार्यो को करने की प्रेरणा मिली।''[4]

फिर दूसरा विद्यालय भितिरहवा मठ के निकट खोला जिसमें मठाधीश ने

कुछ जमीन दी। एक झोपड़ी बनाई गई और विद्यालय का कार्य आरंभ हुआ। शिक्षक के रूप में बम्बई के श्री सदाशिव, लक्ष्मण सुमन, गुजरात के श्री बालकृष्ण, जोगेश्वर पुरोहित, कस्तुरबा गांधी एवं डॉ. देव आदि आधिकृत किए गए। पाठशाला खोलने का क्रम जारी रहा और तीसरा विद्यालय सेठ घनश्याम दासजी के घर में मधुवन में खुला, जिसमें गुजरात के नरहरी द्वारका दास पारिक उनकी पत्नी मनी बाई पारिक, हरिभाई देशाई की पत्नी पूना के महिला आश्रम के कुल सचिव दिवाकरजी की बहन आनंदी बाई के संरक्षण प्रदान किया। महिला शिक्षा विकास के क्रम में भी आनंदी बाई ने पहल की और 40 छात्राओं को सफाई–बुनाई की शिक्षा दी। इस पाठशाला का सम्पूर्ण खर्च सेठ घनश्याम दास ने उठाया। गांधीजी के शब्दो मे इन विद्यालयों को खोलने का उद्देश्य ''जिन स्कूलों को मैं खोल रहा हूँ उनमे 12 वर्ष से कम उम्र के लड़के मिल सके। उनका विचार है कि जितने लड़कें मिल सके उन्हें सब बातों की शिक्षा दी जाए अर्थात हिन्दी, उर्दु का पूरा ज्ञान और उसी के द्वारा गणित, इतिहास और भूगोल की मोटी–मोटी बातें विज्ञान के मूल सिद्धांतो का ज्ञान और थोड़ी सी शिल्पकारी। इसके लिए कोई कटा–छटा कार्यक्रम निश्चित नहीं किया गया है, क्योकि मैं नई राह पर चल रहा हूँ। आजकल की परिपाटी को मैं पसंद नही करता। लिखना–पढ़ना भी इसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए सिखाये जायेंगे। शिल्पकारी उन लड़को और लड़कियों को ही सिखाई जाएगी तो अपने जीवन–निर्वाह के लिए एक और भी जरिये के लिए हमारे यहाँ आयेंगे। मेरा मतलब यह नही हैं कि वे इस प्रकार की शिक्षा पाकर अपना खानदानी पेशा अर्थात गृहस्थी का काम छोड़ दें, बल्कि मेरी इच्छा है कि ये अपनी विद्या को कृषको के जीवन की उन्नति में लगोये। हमारे शिक्षकों का प्रभाव सयानो पर भी पड़ेगा और यदि होसका तो वे पर्दे के भीतर भी अपने प्रभाव को पहुचायेंगें। जवानों को स्वास्थ्य रक्षा का ज्ञान दिया जायेगा और आपस में मिलकर काम करने से क्या लाभ है यह भी बताया जायेगा, जैसे गांव की सड़कों की मरम्मत करना,कुआ खोदना इत्यादि। जहाँ तक हो सकेगा लोगो का मुफ्त में इलाज भी किया जायेगा क्योंकि हमारे सभी शिक्षक चाहे वह पुरूष हो या स्त्री सुशिक्षित रहे।''[5]

गांधीजी ने शिक्षक एवं छात्र–छात्राओं के लिए भी उचित निर्देश दिया। शिक्षकों को अपनी कर्तव्यों के निर्वहन के लिये निर्धारित किया। छात्रावास में नही रखकर माता के संरक्षन में रखने का सुझाव दिया। स्वावलम्बी जीवन जीने को स्वयं सम्पादित करने का संदेश दिया। चम्पारण प्रवास के दरम्यान डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद भी साथ में थे। उन्होंने गांधी एवं कस्तूरबा की सदासचता की चर्चा करते हुए स्वयं लिखा हैं कि –''जब हमलोग पहले पहल चम्पारण पहुँचे तो हमारे साथ नौकर थे, रसोई बनाने के लिए एक रसोईया था। थोड़े ही दिनों में महात्मा जी के इच्छानुसार नौकरों की संख्या कम कर दी गयीं और कुछ दिनों के बाद सिवाय एक के बाद सब हटा दिये गये। फल इसका यह हुआ कि जिन लोगों ने अपने जीवन में एक लोटा जल कुंए से नही निकाला था अथवा जिन्होंने स्नान कर एक गमछा भी नही धोया था,

उन्हीं लोगों ने महात्मा जी के ससंग में थोड़े दिनों में ही एक–दूसरे को नहला देने, कपड़ा धो देने तथा जूठे बर्तनों को साफ करने का संकोच छोड़ दिया। हमलोग ये सब काम स्वयं कर लेते थे। घरो में झाड़ू देना, चौका साफ करना, अपने स्वयं गठरियों को लाना। ये सब काम हमलोग स्वयं कर लिया करते थे।''[6]

इस प्रकार चम्पारण वासियों को नील की खेती की तीन कठिया व्यवस्था से ही गांधीजी ने मुक्त नही कराया वरन सम्पूर्ण चम्पारण को ही नही अपितु एक नई जागृति पैदा की जिसकी वजह से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दुनिया में रखी गयी जिसका प्रतिफल कालान्तर में स्वतंत्रता प्राप्ति से हुई । सही अर्थो में शिक्षा का दीप प्रज्जवलित कर अंधकार के गर्त में धीरे–धीरे चम्पारण के समाज को नई दशा–दिशा दी। हारमांस का बना अजनबाहु एक व्यक्ति जो पारेबंदर मे 8 फीट चौड़ा एवं 10 फीट लम्बे एक साधारण कमरे में जन्म लेकर भारत के भाल पर तिरंगा लहड़ाया। उसके चम्पारण में सम्पादित कार्यो पर डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद से लेकर अब तक दर्जनो पुस्तकें लिखी जा चुकी है और विद्वानो ने उनके इस कार्य के लिए तारीफें दाद दी है। मूलतः गांधी के सत्याग्रह की व्यवस्था का सूत्रपात भी चम्पारण के आन्दोलन पर कार्यो का अंत नही। अतः 1920 ई0 से आगे की चर्चा समीचीन प्रतित होता है।

गांधीजी ने चम्पारण में जिस तकनीक का प्रयोग किया वह कालान्तर में सत्याग्रह में परिणत हुआ। सामाजिक न्याय, निर्भयता और ईमानदारी का जो पाठ चम्पारण के प्राणी को पढ़ाया वह कालान्तर में विकास का मेरूदण्ड साबित हुआ। 1919 के मान्टेग्यू चेर्म्सफोर्ड रिपोर्ट की प्रतिक्रिया में जो 1920 में गांधी ने जो असहयोग आंदोलन छेड़ा, जो उस क्रम में उन्होने सम्पूर्ण बिहार का तुफानी दौड़ा किया और सम्पूर्ण बिहार में असहयोग आंदोलन ने यथेष्ट योगदान दिया जिसमें चम्पारण अग्रगण्य था। बिहार एवं चम्पारण के दौरे के क्रम में डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, गोरख प्रसाद, विपिन बिहारी वर्मा और प्रजापति मिश्र प्रमुख रूप से उनके साथ थे। गांधीजी ने0 1 अगस्त 1920 को असहयोग आंदोलन का संखनाद किया। इसका व्यापक असर मोतिहारी और बेतिया पर पड़ा जहाँ व्यापारियों ने सम्पर्ण दुकाने बंदकर असहयोग में साथ दिया।''[7]

संदर्भ ग्रंथ

1. गांधीजी आत्मकता पृष्ट संख्या–357–58
2. डॉ बी0बी0 मिश्र सेलेक्टेड डाकुमेन्ट ऑन गांधीजी मुवमेंट इप चम्पारण 1917–18
3. ब्रजकिशोर सिंह–नील संघर्ष और गाँधी पृष्ट संख्या–152
4. ब्रजकिशोर सिंह–नील संघर्ष और गाँधी पृष्ट सं0–154
5. ब्रजकिशोर सिंह नीज संघर्ष और गाँधी पृष्ट संख्या–156–57
6. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद आत्मकथा पृष्ट सं0–142
7. सर्च लाईट अथवा 5 अगस्त 1920